ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वर्ष 46 | अंक 09 | पृष्ठ 08 | दयानन्दाब्द 199 | एक प्रति ₹ 5 | वार्षिक शुल्क ₹250 | सोमवार, 26 दिसम्बर, 2022 से रविवार 01 जनवरी, 2023 | विक्रमी सम्वत् 2079 | सृष्टि सम्वत् 1960853123
दूरभाष/ 23360150 | ई-मेल/ aryasabha@yahoo.com | इन्टरनेट पर पढ़े/ www.thearyasamaj.org/aryasandesh

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानंद के सेवा कार्यों की पहले से भी अधिक है आवश्यकता आज

96 वें बलिदान दिवस पर विशाल शोभायात्रा और सार्वजनिक सभा समारोह पूर्वक संपन्न

आर्य संन्यासी, आर्य नेता, आर्यवीर, वीरांगना, स्त्री, पुरुष, छात्र, छात्राओं सहित हर आयु वर्ग के आर्यजन हुए उत्साह पूर्वक सम्मिलित

मानव सेवा एवं कल्याण के प्रेरणा स्तंभ थे, स्वामी श्रद्धानंद -महामहिम राज्यपाल, बाबू गंगा प्रसाद

स्वामी श्रद्धानंद जी के महान व्यक्तित्व से हर आयुवर्ग का व्यक्ति ले प्रेरण -सुरेंद्र कुमार आर्य, चेयरमैन, जे.बी.एम. ग्रुप

श्रद्धानंद बलिदान दिवस को धर्म रक्षा दिवस के रूप में मनाया जाए -कपिल खन्ना

देश का विकास और मानव कल्याण वैदिक धर्म से ही सम्भव -जितेन्द्र नारायण त्यागी

सर्व समाज को गले लगाओ, भारत को मजबूत बनाओ, का लें संकल्प -सुरेन्द्र रैली

रामलीला मैदान में सार्वजनिक सभा के अवसर पर मंचस्थ सिक्किम के महामहिम राज्यपाल श्री गंगा प्रसाद जी, सर्वश्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी, आदेश गुप्ता जी, सुरेन्द्र रैली जी, कीर्ति शर्मा जी, जोगेन्द्र खट्टर जी, आर्य सतीश चडडा, श्रीमती ऊषा किरण कथूरिया जी, विनय आर्य जी श्रीमती वीना आर्या जी, विश्रुत आर्य जी एवं उपस्थित आर्यजन

आर्य समाज का इतिहास सदा त्याग, तपस्या और बलिदान को समर्पित रहा है। भारत राष्ट्र की गौरवशाली वैदिक संस्कृति, सभ्यता और संस्कारों के संरक्षण तथा संवर्धन सहित आजादी से लेकर मानव सेवा एवं राष्ट्र निर्माण के लिए प्रतिबद्ध आर्य समाज के महापुरुषों ने समय-समय पर अपने अमर बलिदानों से संपूर्ण मानव जाति को उपकृत किया है। आर्य समाज की महान विभूतियों के बलिदान की वृहद श्रृंखला में महर्षि दयानंद सरस्वती जी के अनन्य शिष्य अमर हुआत्मा स्वामी श्रद्धानंद जी के 96 वें बलिदान दिवस पर 25 दिसंबर 2022 को दिल्ली की समस्त आर्य समाजों एवं आर्य शिक्षण संस्थाओं की ओर से आर्य केंद्रीय सभा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त तत्वावधान में विशाल शोभायात्रा और रामलीला मैदान में विराट सार्वजनिक सभा उत्साह पूर्वक संपन्न हुई। सर्वप्रथम स्वामी श्रद्धानंद बलिदान भवन में आर्य समाज नयाबांस के पुरोहित श्री सहदेव शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में श्रीमती कमलेश जी एवं श्री राजेन्द्र चौधरी जी, श्रीमती पूजा जी एवं श्री देवेन्द्र जी और श्रीमती कामनी जी एवं श्री नरेन्द्र वर्मा जी तथा अन्य आर्यजनों ने सामूहिक यज्ञ किया। तदोपरांत वहां से विशाल शोभायात्रा शुरू हुई। जिसका नेतृत्व आर्य समाज के मूर्धन्य संन्यासी स्वामी प्रणवानंद जी महाराज सहित अनेक अन्य संन्यासी वृन्दों के साथ आर्य केंद्रीय सभा के प्रधान श्री सुरेन्द्र रैली, महामंत्री आर्य सतीश चड्ढा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य, श्री अरुण प्रकाश वर्मा, श्री सुभाष दुआ, श्री अजय सहगल, श्रीमती ऊषा किरण, श्री जितेन्द्र नारायण त्यागी, पूव नाम श्री वसीम रिजवी, श्री कृपाल सिंह आर्य, अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के महामंत्री श्री जोगेंद्र खट्टर, श्रीमती रचना आहूजा प्रधाना प्रान्तीय आर्य महिला सभा, दिल्ली के समस्त क्षेत्रीय वेदप्रचार मंडलों के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्यों इत्यादि ने शोभा यात्रा की अग्रिम पंक्ति में नेतृत्व प्रदान किया। आर्य वीर दल, आर्य वीरांगना दल, गुरुकुल, कन्या गुरुकुल, आर्य विद्यालयों के छात्र, छात्राओं, आर्य समाजों के अधिकारी, कार्यकर्ता, सदस्यों सहित हर आयु वर्ग के स्त्री पुरुषों ने शोभायात्रा को विराट स्वरूप प्रदान किया। आर्यों की यह शोभायात्रा गत वर्षो की भांति आर्य समाज की शक्ति का प्रदर्शन करते हुए, महर्षि दयानंद सरस्वती का जय जयकार करते हुए, आर्य समाज और ओम का झंडा ऊंचा रहे के गगन भेदी नारे लगाते हुए स्वामी श्रद्धानंद बलिदान भवन, नया बाजार से प्रारंभ होकर, लाहौरी गेट, खारी बावली, फतेहपुरी, चांदनी चौक, नई सड़क, हौज काजी चौक, अजमेरी गेट, आसफ अली रोड होते हुए अपनी अपार सफलताओं के साथ रामलीला मैदान में एक सार्वजनिक सभा के रूप में परिवर्तित हुई।

शोभायात्रा के विशेष आकर्षण

आर्यों की इस विशाल शोभायात्रा में हर आयु वर्ग के स्त्री पुरुष पूरे अनुशासन और व्यवस्था के साथ चले। सुंदर झांकियां निकाली गई, जिनमें यज्ञ करते हुए, देशभक्ति के भजन गाते हुए, जयघोष लगाते हुए, मलखम पर योगासन करते हुए विभिन्न मनमोहक दृश्य सबके मन को मोहित कर रहे थे। यह सर्वविदित है कि आर्य समाज का युवा संगठन मानव सेवा के लिए सदैव

- शेष पृष्ठ 4, 5 एवं 7 पर

विशाल शोभायात्रा का नेतृत्व करते सर्वश्री सुरेन्द्र रैली जी, जितेन्द्र नारायण त्यागी जी, विनय आर्य जी, सुभाष दुआ जी, अरुण प्रकाश वर्मा जी, संन्यासी वृंद एवं अन्य महानुभाव तथा आर्यवीर दल, वीरांगना दल, गुरुकुलों, आर्य विद्यालयों के छात्र, छात्राएं एवं आर्य समाजों के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्यगण

वेदवाणी-संस्कृत

मैं मोक्ष प्राप्त करूँ

वेद-स्वाध्याय

नाहमतो निरया दुर्गहैतत् तिरश्चता पार्श्वान्निर्गमाणि।
बहूनि मे अकृता कर्त्वानि युध्यै त्वेन सं त्वेन पृच्छै॥

-ऋक्. 4 । 18 । 2

ऋषिः-वामदेवः॥ देवता-इन्द्रादिती॥ छन्दः-त्रिष्टुप्॥

शब्दार्थ- **अहम्**=मैं **अतः**=इस संसारी रास्ते से **न निरयाः**=नहीं निकलूँगा। **एतत् दुर्गहा**=यह मेरे लिए कठिन है, दुर्ग्रह है। मैं तो **तिरश्चता**=सीधे मार्ग से **पार्श्वात्**=सामने के पार्श्व से ही **निर्गमाणि**=भेदन करके निकल जाऊँगा। मैंने तो **बहूनि**=बहुत-से **अकृता**=अभी तक किसी से न किये गये कर्मों को **कर्त्वानि**=करना है। **त्वेन**=एक से मैं **युध्यै**=लड़ूँगा, जबकि **त्वेन**=एक से, दूसरे से **संपृच्छै**=मैं पूछूँगा, नम्र होकर उपदेश प्राप्त करूँगा।

विनय- इस सांसारिक पगडंडियों वाले रास्ते से मैं नहीं चलूँगा, जिससे संसार चलता है। मैं तो सीधा अपने लक्ष्य पर पहुंचूंगा। मैं मामूली मनुष्य नहीं हूँ, मैं श्रेष्ठ देव हूँ। मैं भोग भोगने आया हुआ पृथिवी पर रेंगने वाला कोई संसारी कीड़ा नहीं हूँ, मैं परब्रह्म की ओर वेग से उड़ने वाला अदम्य आत्मा हूँ। सांसारिक सुखों के पीछे फिरना और वहाँ नाना दुःख भोगना इस रास्ते को मैं नहीं पकड़ूँगा। मेरे लिए यह बड़ा दुःखप्रद है। इस संसाररूपी बड़े भारी गर्भ में अन्य संसारियों की तरह रास्ता पकड़ने के लिए मैं अपरिमित समय तक पड़ा नहीं रह सकता। मैं तो अभी इस संसार-बन्धन से बाहर निकलूँगा, मुक्त होऊँगा। मै। सांसारिक सुखों की दुःखरूपता को जानता हूँ। मैं ज्ञानी हुआ हूँ, मैं अब इनमें नीचे नहीं उतरूँगा। मैं तो सीधा चलूँगा। सामने के पार्श्व को तोड़कर, दीवार को फोड़कर सीधा बाहर निकलूँगा। तुम मुझे चाहे चले रास्ते से ही चलने को कहते रहो, पर मैं तो धारा को चीरकर, पहाड़ को लांघकर सीधा अपने लक्ष्य पर पहुंचूंगा। तुम कहते हो कि यह असम्भव है, पर मैं कहता हूँ कि मैंने तो अभी बहुत से ऐसे कार्य करने हैं जो संसार के लिए नये हैं। मैं आश्रम-क्रम से न चलकर अभी सीधा संन्यासी बनूँगा। इस संसार में पूर्ण ब्रह्मचारी होना असम्भव समझा जाता है, पर मैं पूर्णरूप से ब्रह्मचारी बनूँगा। अपने-से राग-द्वेष को बिल्कुल निकाल देना बेशक समुद्र को सुखा देना है, पर मैं इस प्रकार राग-द्वेष से सर्वथा रहित भी होऊँगा। तुम बेशक मुझे संसार के बनाये रास्तों से ही धीमे-धीमे चलने को कहते हो, पर मैं तो सब संसार से उलटा चलूँगा। मैं संसार-भर से लड़ूँगा। हाँ, जहाँ मैं इस सब संसार से लड़ूँगा, वहाँ प्रभु के सामने झुकूँगा। जहाँ एक ओर इस मत्त संसार से लड़ाई ठानूँगा, पग-पग पर भिड़ूँगा, वहाँ दूसरी ओर अपने परम गुरु से नम्रभाव से पूछूँगा, शिष्य-भाव से उपदेश प्राप्त करूँगा। एवं, उस प्रभु की ओर वेग से आकर्षित होता हुआ और प्रभु के उस प्रबल आकर्षण में मार्ग की सब विघ्न-बाधाओं को विनष्ट करता हुआ मैं अभी इस संसार-कारागार से बाहर निकलूँगा, मोक्ष प्राप्त करूँगा।

-:साभार:- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

संपादकीय

क्या सच में देश में नफरत का बोलबाला है?

प्यार और नफरत के प्रहारों की समीक्षा

> ***केंद्र में कांग्रेस की सरकार थी ना जब शंकराचार्य जयेंद्र सरस्वती जी को दीपावली की रात गिरफ्तार करती है और हिन्दुओं के एक बड़े संत को उस गाड़ी में डालकर ले जाती है, जिसमें गुंडे जेबकतरे बलात्कार के आरोपी भरे थे? लगातार दो महीने तक देश का मिडिया शंकराचार्य जयेंद्र सरस्वती जी उनके मठ और सनातन धर्म के अपमान में लिप्त रहा। यहाँ तक कि उस वक्त प्रणव मुखर्जी ने कांग्रेस की एक मीटिंग में सवाल तक किया था कि क्या इस देश में ईद के दिन सरकार किसी मौलवी को गिरफ्तार कर सकती है आसाराम की गिरफ्तारी के समय क्या हुआ था, यही मिडिया थी जो उस दौरान 2 महीने तक सनातन धर्म को नीचा दिखाती रही थी? ये ही सरकारें थी जो असीमानन्द जी से लेकर साध्वी प्रज्ञा तक को झूठे मामलों में जेल में ठूस रहे थे और हिन्दू आतंक का मिथक गढ़ रहे थे। हो सकता है आज मिडिया और सरकारी नेताओं के बयान से देश में नफरत फैल रही हो दंगा हो रहा हो, भारत टूट रहा हो? लेकिन क्या ये बता सकते हैं कि 1990 में आंध्र प्रदेश की राजधानी हैदराबाद में हुए सांप्रदायिक दंगों में 200 से भी अधिक लोग मारे गए थे। उस दौरान आंध्र प्रदेश में कांग्रेस की सरकार थी जिसमें बड़ी संख्या में हिन्दू थे। क्या ये बता सकते हैं तब भारत जुड़ रहा था या टूट रहा था? तब वो नफरत किसने फैलाई थी तब उस असहनशीलता का जिम्मेदार कौन था?***

देश में नफरत फैल रही और हम प्यार फैला रहे हैं, ये शब्द कांग्रेस नेता राहुल गाँधी के हैं, सिर्फ उनके ही नहीं आमतौर पर अब एक धारणा बना दी गयी कि देश में नफरत का माहौल है। यहाँ तक कि पिछले दिनों सुप्रीम कोर्ट ने भी हेट स्पीच से भरे टॉक शो और रिपोर्ट टेलीकास्ट करने पर टीवी चैनलों को जमकर फटकार लगाई थी। यानि चैनल नफरत फैला रहे हैं, सरकार से जुड़े कुछ लोग नफरत फैला रहे हैं। इसके अलावा कुछ पूर्व न्यूज़ एंकर हैं वो भी बार-बार इसी बात को दोहरा रहे हैं कि नफरत फ़ैल रही है।

आपको याद होगा साल 2015 अचानक इस देश में कलाकारों, लेखकों, शिक्षाविदों और वैज्ञानिकों और कांग्रेस नेताओं का एक गुट खड़ा हो गया था जिसने आरोप लगाया था कि देश में इनटॉलेरेंस यानि असहनशीलता फैल रही है। इसके बाद भारत और विदेशों में शैक्षणिक संस्थानों से जुड़े तक़रीबन 200 शिक्षाविदों ने बढ़ती 'असहिष्णुता और कट्टरपन' के खिलाफ एक संयुक्त बयान जारी किया था और पुरुस्कार वापिस करो आन्दोलन चलाया था।

यानि तब असहनशीलता फैल रही थी अब नफ़रत फैल रही है। हो सकता है ऐसा हो! लेकिन सवाल ये है कि क्या देश में पहले बहुत प्रेम था। क्या पहले कोई हिंसा या दंगा नहीं हुआ था। या क्या पहले ऐसा नहीं होता था?

हम इसकी निष्पक्ष होकर जाँच करें तो बहुत सवाल निकलकर सामने आते हैं, और कांग्रेस के नेताओं पर सवाल खड़े होते हैं जो आज प्रेम सद्भाव सहअस्तित्व भाईचारे भारत को जोड़ने जैसे जुमले लेकर आगे बढ़ रहे हैं। जो आज श्रद्धा, अंकिता की हत्या पर मुस्लिम जगत पर सवाल खड़े करने पर इसे देश तोड़ने वाली खबर बताते हैं, लेकिन क्या वो बता सकते हैं कि कठुवा आसिफा केस में जिस तरह समूचे हिन्दू समाज मंदिरों समेत देवस्थानों पर सवाल खड़े किये गये और कठुआ मामले को लेकर वे हिन्दू समाज मंदिरों को बदनाम करने का अभियान चला रहे थे। यही मिडिया थी कठुआ रेप मामले में एक गरीब परिवार को देश की अदालतों से पहले गुनहगार साबित कर उसे सजा देने पर तुली थी। क्या तब देश में प्रेम फ़ैल रहा था? इससे कौन सा भारत जोड़ रहे थे?

दूसरा आज कई नेताओं पर मुस्लिम विरोधी बयान देने का आरोप लगता है। लेकिन जब ये लोग सत्ता में थे तब तत्कालीन गृह मंत्री सुशील कुमार शिंदे को हिन्दू और भगवा रंग में आतंकवाद दिखाई देता था। यहाँ तक उस दौरान उनके बयान का पाकिस्तान ने भी स्वागत किया था और इसे अपने मुल्क के अखबारों की हेडलाइन बनाया था। तब ऐसे बयानों से कौन सा भारत जोड़ रहे थे?

आज कहते हैं कि सरकार के खिलाफ नहीं बोलने दिया जा रहा है तानाशाही है। सरकार से सवाल पूछने पर ईडी के छापे लगते हैं, पुलिस गिरफ्तार कर लेती है। लेकिन क्या ये बता सकते हैं जब ये लोग सत्ता में थे तब भ्रष्टाचार का मुद्दा उठाने पर अन्ना को जेल भेज दिया गया था? स्वामी रामदेव जी को सरकार के खिलाफ बोलने पर आधी रात को पुलिस लाठीचार्ज कर देती है। क्या तब इससे देश में प्रेम की बयार बह रही थी या इससे भारत जुड़ रहा था?

केंद्र में कांग्रेस की सरकार थी ना जब शंकराचार्य जयेंद्र सरस्वती जी को दीपावली की रात गिरफ्तार करती है और हिन्दुओं के एक बड़े संत को उस गाड़ी में डालकर ले जाती है, जिसमें गुंडे जेबकतरे बलात्कार के आरोपी भरे थे? लगातार दो महीने तक देश का मिडिया शंकराचार्य जयेंद्र सरस्वती जी उनके मठ और सनातन धर्म के अपमान में लिप्त रहा। यहाँ तक कि उस वक्त प्रणव मुखर्जी ने कांग्रेस की एक मीटिंग में सवाल तक किया था कि क्या इस देश में ईद के दिन सरकार किसी मौलवी को गिरफ्तार कर सकती है आसाराम की गिरफ्तारी के समय क्या हुआ था, यही मिडिया थी जो उस दौरान 2 महीने तक सनातन धर्म को नीचा दिखाती रही थी? ये ही सरकारें थी जो असीमानन्द जी से लेकर साध्वी प्रज्ञा तक को झूठे मामलों में जेल में ठूस रहे थे और हिन्दू आतंक का मिथक गढ़ रहे थे।

हो सकता है आज मिडिया और सरकारी नेताओं के बयान से देश में नफरत फैल रही हो दंगा हो रहा हो, भारत टूट रहा हो? लेकिन क्या ये बता सकते हैं कि 1990 में आंध्र प्रदेश की राजधानी हैदराबाद में हुए सांप्रदायिक दंगों में 200 से भी अधिक लोग मारे गए थे। उस दौरान आंध्र प्रदेश में कांग्रेस की सरकार थी जिसमें बड़ी संख्या में हिन्दू थे। क्या ये बता सकते हैं तब भारत जुड़ रहा था या टूट रहा था? तब वो नफरत किसने फैलाई थी तब उस असहनशीलता का जिम्मेदार कौन था?

1984 में दिल्ली और पंजाब में इंदिरा गाँधी की हत्या के बाद सिखों को चुन-चुनकर मारा गया था। इस दंगे में कई कांग्रेस नेताओं पर आज तक मुक़दमे चल रहे हैं। इस दंगे में हजारों सिख मारे गए थे। पूरे भारतीय इतिहास में शायद ही कभी इस तरह एकतरफा

- शेष पृष्ठ 7 पर

स्वास्थ्य संदेश

'मोतियाबिन्द' की वजह से अंधे हो जाते हैं लोग

वैसे तो शरीर में हर अंगों का महत्व है परन्तु आंखों का महत्व सर्वाधिक माना जाता है। ये आंखें ही तो हैं जिनके द्वारा हम संसार से परिचित होते हैं। धुंआ, धूल-प्रदूषण और अनेक प्रकार के अदृश्य कीटाणुओं के कारण अक्सर हमारी आंखें प्रभावित होती रहती हैं। ऐसे में आंखों की सुरक्षा में लापरवाही कदापि न बरतें।

आंखों से संबंधित बहुत सारे रोग हैं परन्तु यहां पर मोतियाबिन्द का काला मोतिया (ग्लूकोमा) पर चर्चा किया जा रहा है।

अधिक उम्र हो जाने पर अक्सर लोगों को 'मोतियाबिन्द' नाम की आंखों की बीमारी हो जाती है। आंखों में इस रोग के प्रकोप से आंखों के देखने की क्षमता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। एक तरह से आज के संदर्भ में कहा जाय तो 'मोतियाबिन्द' अंधता का कारण है। बाकी कारणों में एजरिलेटेड मैक्यूलर डीजनरेशन, काला मोतिया (ग्लूकोमा), डायबिटीज, रैटिनोपैथी, माढ़ा, ट्रैकामा आंखों में लगी कई चोट या विटामिन (ए) की कमी है। आज हमारे देश में लगभग 50 प्रतिशत लोग 'मोतियाबिन्द' की वजह से अंधे हो जाते हैं।

जेनेवा स्थित विश्व स्वास्थ्य संगठन ने सबसे पहले 1999 में देखने की क्षमता अंधता व दृष्टि से जुड़े विकारों के बारे में आकलन किया था। संगठन के बारे में इस संबंध में जो आंकड़े एकत्रित किए गए, उसके अनुसार सारे विश्व में लगभग 20 प्रतिशत लोग दृष्टि दोष से पीड़ित हैं, वहीं लगभग 50 करोड़ लोग अंध ता की गिरफ्त में आ चुके हैं। सन् 2020 तक इन आकड़ों में और इजाफा होने की संभावना जताते हुए विश्व स्वास्थ्य संगठन ने चिन्ता व्यक्त की है। वैसे तो मोतियाबिन्द का उपचार आपरेशन से ही संभव है परन्तु

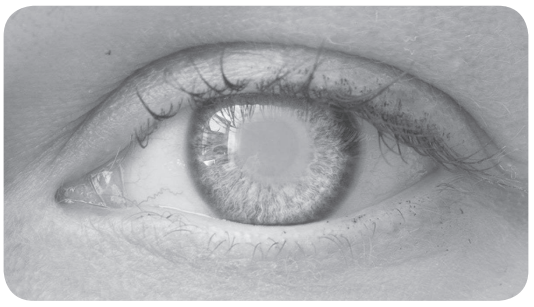

"अधिक उम्र हो जाने पर अक्सर लोगों को 'मोतियाबिन्द' नाम की आंखों की बीमारी हो जाती है। आंखों में इस रोग के प्रकोप से आंखों के देखने की क्षमता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। एक तरह से आज के संदर्भ में कहा जाय तो 'मोतियाबिन्द' अंधता का कारण है। बाकी कारणों में एजरिलेटेड मैक्यूलर डीजनरेशन, काला मोतिया (ग्लूकोमा), डायबिटीज, रैटिनोपैथी, माढ़ा, ट्रैकामा आंखों में लगी कई चोट या विटामिन (ए) की कमी है। आज हमारे देश में लगभग 50 प्रतिशत लोग 'मोतियाबिन्द' की वजह से अंधे हो जाते हैं। उल्लेखनीय है कि आनंदधाम आश्रम के 'करुणासिन्धु अस्पताल' के 'नेत्र विभाग में वरिष्ठ नेत्र चिकित्सकों द्वारा आंखों का सफल आपरेशन और चिकित्सा की उत्तम व्यवस्था है। यहां आंखों का दान भी कर सकते हैं। मरने के पहले अपना 'नेत्रदान' करते जाइए, ताकि किसी की अंधेरी जिन्दगी को आप रोशनी से भर कर जाइए।"

आरम्भ में ही सजगता बरतते हुए इस रोग का उपचार कर लिया जाय तो आपरेशन से बचा जा सकता है।

''काला मोतिया' के रोकथाम के लिए समय-समय पर आंखों की जांच करवाना चाहिए। आंखें और आंखों की देखने की क्षमता पर 'मधुमेह' रोग का भी काफी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। मधुमेह रोगियों को ब्लड शुगर पर नियंत्रण रखते हुए अपनी आंखों की हिफाजत करनी चाहिए। आंखों के स्वास्थ्य के लिए पर्याप्त नींद लेना जरूरी है। 6 से 8 घंटे की नींद तो हर व्यक्ति को लेनी ही चाहिए। भरपूर नींद लेने से आंखों की नाडियां (आप्टिक नर्व्स) को बहुत आराम मिलता है जिससे आंखें ठीक रहती हैं। अगर आपको पास या दूर तक देखने में कोई कठिनाई आ रही है तो आपको नेत्र विशेषज्ञ से आंखों की जांच कराकर चश्मा लेना ठीक रहेगा।

व्यायाम– शरीर के बाकी हिस्सों की तरह आंखों में भी रक्त संचार की प्रक्रिया हरदम होती रहती है। अगर आंखों को सही रूप से रक्त की आपूर्ति होगी तभी उसी कार्य प्रणाली सही ढंग से चल पायेगी। आंखों की सुरक्षा के लिए आप किसी योग्य योगगुरु के निर्देशन में सर्वांग आसन भी कर सकते हैं।

आहार– संतुलित और पौष्टिक आहार के सेवन से आप अपने शरीर के साथ आंखों को भी स्वस्थ रख सकते हैं। ऐसे खाद्य पदार्थों का सेवन करें। जिनसे आपको विटामिन (ए) प्राप्त हो। पपीता, गाजर, टमाटर के द्वारा आप विटामिन (ए) प्राप्त कर सकते हैं। आहार में फल और हरी सब्जियों को आप शामिल करें। ड्राई फ्रूट्स, मौसमी फलों के द्वारा भी आप विटामिन्स और मिनरल्स की प्राप्ति कर सकते हैं। साबुत अनाज को अपने आहार में शामिल करें।

-क्रमशः अगले अंक में...

बाल बोध

सफलता का रहस्य

सफलता का आनंद उन्हें ही मिलता है जो असफलता के सामने कभी घुटने नहीं टेकते, हिम्मत और हौसले के संघर्ष करते हैं। क्योंकि जीवन में कोई भी हार अन्तिम पराजय नहीं होती, बशर्ते विजय का प्रयास न छोड़ा जाए। सफलता के सदैव दो पक्ष होते हैं। सफलता के लिए पुरुषार्थ करना आवश्यक है, असफलता के लिए नहीं। बुद्धिमान व्यक्ति असम्भव को सम्भव नहीं बनाता लेकिन सम्भावनाओं को उजागर अवश्य करता है। असफलता से सफलता की ओर कदम बढ़ाने के लिए प्रस्तुत प्रेरक लेख स्वयं पढे और अन्यों का पढ़ाएं।

असफलता सफलताओं का मार्ग तैयार करती है। विचारक वैटसन का कहना है कि जिन्हें सफलता की चाह हो उन्हें असफलता की दर दोगनी कर देनी चाहिए। असफलताओं से मिले अनुभव ही सफल मार्ग के पथप्रदर्शक बन जाते हैं।

इतिहास साक्षी है कि सफलता की कहानियों का आधार असफलता की बड़ी श्रंखला होती है। फिर जो उत्साही लोग इस उपरोक्त तथ्य को जानते हैं वे असफलता से निराश नहीं होते, अपितु उन्हीं असफलताओं से सबक लेते हुए सफलता के रास्ते खोज निकालते हैं। महान वैज्ञानिक थामस एल्वा एडिसन ने जब बल्ब का आविष्कार किया तो सैकड़ों बार असफल हुआ। किसी ने व्यंग्य करते हुए इस वैज्ञानिक को कहा महाशय आप इस अविष्कार में इतनी अधिक बार असफल हुए हैं। उत्तर में एडिसन ने कहा नहीं, असफल नहीं अपितु मैंने सीखा है कि अमुक तरीकों से बल्ब नहीं बनता।

यहां कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं उन विशिष्ट व्यक्तियों के जिन्होंने असफलता से हार नहीं मानी, अपितु जीवन को संघर्ष का ही पर्याय मानकर जूझते रहे और जीवन की बुलन्दियों को छुआ। यह उस व्यक्ति की जीवन्त कथा है जो 21 वर्ष की आयु में

"सफलता का आनंद उन्हें ही मिलता है जो असफलता के सामने कभी घुटने नहीं टेकते, हिम्मत और हौसले के संघर्ष करते हैं। क्योंकि जीवन में कोई भी हार अन्तिम पराजय नहीं होती, बशर्ते विजय का प्रयास न छोड़ा जाए। सफलता के सदैव दो पक्ष होते हैं। सफलता के लिए पुरुषार्थ करना आवश्यक है, असफलता के लिए नहीं। बुद्धिमान व्यक्ति असम्भव को सम्भव नहीं बनाता लेकिन सम्भावनाओं को उजागर अवश्य करता है। असफलता से सफलता की ओर कदम बढ़ाने के लिए प्रस्तुत प्रेरक लेख स्वयं पढे और अन्यों का पढ़ाएं।"

व्यापार में असफल हुआ, 26 साल की उम्र में उसकी पत्नी का देहान्त हो गया, 27 साल की उम्र में कांग्रेस का चुनाव हार गया, 45 साल की उम्र में सीनेट का चुनाव हारा, 47 साल की उम्र में उपराष्ट्रपति बनने के प्रयास में नाकामयाब रहा, फिर 49 साल की उम्र में सीनेट चुनाव हार गया और 52 साल की उम्र में अमेरिका का राष्ट्रपति चुना गया।

यह व्यक्ति अब्राहम लिंकन था। इस व्यक्ति ने असफलता को मार्ग की बाधा तो माना पर हार मानकर बैठ नहीं गया और अमेरिका जैसे देश में सर्वोच्च चुना गया।

10 दिसम्बर, 1903 को न्यूयार्क टाइम्स के सम्पादकीय लेख ने राइट ब्रदर्स की समझ पर ही सवालिया निशान लगा दिए थे, ये दोनों भाई एक ऐसी मशीन बनाने की कोशिश कर रहे थे जो हवा से भारी होने पर भी उड़ सके। राइट ब्रदर्स निराश नहीं हुए और इसके एक सप्ताह पश्चात किट्टीहांक में उन्होंने अपनी उड़ान भरी।

65 वर्ष के वृद्ध कर्नल सैंडर्स के पास एक पुरानी कार और सिक्युरिटी से प्राप्त सिर्फ 100 डालर थे। इतने से उन्होंने कुछ व्यापार करने की योजना बनाई, उन्हें मां द्वारा सिखाई गई रेसपी याद थी। उन्होंने एक हजार दरवाजे खटखटाए, तब कहीं जाकर उन्हें पहला खरीददार मिला। प्रायः हम दो अथवा पांच कोशिशों के पश्चात हार मानकर बैठ जाते हैं और मन को सान्त्वना देते हैं कि जितना हमसे हो सकता था हमने किया।

युवा कार्टूनिस्ट वाल्ट डिस्नी के कार्टूनों को बहुत संपादकों ने घटिया बताते हुए लौटा दिया। एक बार चर्च अधिकारी ने उन्हें कार्टून बनाने का काम दिया। वाल्ट डिस्नी चर्च के पास चूहों से भरे एक छोटे से कमरे में बैठे अपना काम कर रहे थे। एक नन्हें चूहे को देखकर उसे कुछ नया करने की सूझी और वहीं से मिकी माऊस की शुरुआत हुई।

एक दिन ऊंचा सुनने वाला चार साल का बच्चा अपनी टीचर के द्वारा दिए गए नोट के साथ घर पहुंचा। उस नोट पर लिखा था, ''आपका टामी इतना बेवकूफ है कि कुछ सीख नहीं सकता, इसे स्कूल से निकाल लीजिए। उसकी मां ने नोट पढ़कर उत्तर

-क्रमशः अगले अंक में...

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर विशिष्ट महानुभावों का प्रेरक उदबोधन

जे.बी.एम. ग्रुप के चेयरमैन एवं द.से.श्र. संघ के प्रधान श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी ने अपने उदबोधन में कहा कि दो वर्षों के अन्तराल के बाद होने वाली इतनी विशाल शोभायात्रा की सफलता की बधाई देता हूं। सभी की सहभागिता और उत्साह को देखकर यह विश्वास और भी दृढ़ हो जाता है कि भविष्य में आर्य समाज ही राष्ट्र निर्माण एवं भारतीय संस्कृति की रक्षा के आंदोलनों को नेतृत्व प्रदान करेगा। स्वामी श्रद्धानन्द ने बिछड़े परिवारों को फिर से गले लगाया, शुद्धि आंदोलन चलाया और लाखों लोग को वैदिक धर्म में लौटाया। आज पुनः आवश्यकता है कि आर्य समाज इस कार्यक्रम को नेतृत्व प्रदान करे। भारतीय शुद्धि सभा इस क्षेत्र में बहुत कार्य कर रही है। आज मैं आप सभी का आहवान भी करता हूं कि इस वर्ष 2024 एवं 2025, हम सबके लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। 2024 में हमें जहां युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द के जन्म की द्वि-शताब्दी बड़े समारोह पूर्वक आयोजित करनी है, वहीं अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन भी दिल्ली में होना है। साथ ही 2025 में आर्य समाज की स्थापना के 150 वर्ष भी एक बड़ा अवसर होगा। आइये, हम सब महर्षि दयानन्द के सच्चे सैनिक बनकर, आपसी मतभेदों को भुलाकर एक नए उत्साह, नई उमंग से एक टीम भावना से इन कार्यक्रमों के आयोजन के लिए तन, मन और धन से आगे आएं और अपनी भूमिका सुनिश्चित करें।

श्री जितेंद्र नारायण त्यागी जी, पूर्व नाम वसीम रिजवी जी ने महर्षि दयानंद सरस्वती जी और आर्य समाज के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए स्वामी श्रद्धानंद जी को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि मैंने अपने जीवन में स्वामी श्रद्धानंद जी महाराज को उस समय पढ़ा जब मैं जेल में था, स्वामी श्रद्धानंद जी महाराज ने देश, धर्म और संस्कृति के लिए जो कुछ किया वह चिरकाल तक अविस्मरणीय रहेगा और आने वाली पीढ़ी उनसे प्रेरणा लेंगी। उन्होंने कहा कि आजकल सेक्युलरिज्म का ढिंढोरा पीटने वाले लोग देश के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं, दुनिया गवाह है की आपसी रंजिश में लोग धर्म और समाज को वैचारिक रूप से बांटने का काम कर रहे हैं। एक वर्ग विशेष का कट्टर रवैया है, वे केवल अपने को ही सही मानते हैं। मैंने अपने विचारों को मजबूत किया और देश धर्म और इंसानियत को खतरे में डालने वाली राह को छोड़ दिया। सनातन धर्म सबसे पहला वैदिक धर्म ही है। मैंने स्वेच्छा से हिंदू धर्म अपनाया है, वैदिक धर्म के द्वारा ही संस्कृति और सभ्यता की रक्षा होगी। वैदिक धर्म से देश का विकास और मानव कल्याण होगा। मेरे साथ श्री विनय आर्य जी का बड़ा सहयोग रहा। आज मैं स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं। और स्वामी श्रद्धानंद जी को शत शत नमन करता हूं, उनके दिखाए रास्ते पर आगे बढ़ूंगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के मंत्री श्री उमेद सिंह शर्मा जी ने स्वामी श्रद्धानंद जी को नमन किया और कहा कि श्री विनय आर्य जी एक ऐसे कर्मठ अधिकारी हैं, जो केवल दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री के रूप में ही नहीं बल्कि पूरे देश और दुनिया में आर्य समाज को गति प्रगति और उन्नति का मार्गदर्शन करने वाले आदर्श अधिकारी हैं। आपके नेतृत्व में दिल्ली सभा द्वारा संचालित सेवा प्रकल्प स्वामी श्रद्धानंद जी के कार्यों को बढ़ा रहे हैं। आपका पूरा जीवन आर्य समाज को समर्पित है, आज स्वामी श्रद्धानंद जी के बलिदान दिवस पर हमें उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए और मानव सेवा के कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेना चाहिए। हरियाणा सभा हमेशा दिल्ली सभा के साथ है और कंधे से कंधा मिलाकर हम निरंतर आगे बढ़ेंगे ऐसा मैं आश्वासन देता हूं, दिल्ली सभा हरियाणा सभा के बड़ा भाई के समान है।

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के महामंत्री श्री विश्रुत आर्य जी ने स्वामी श्रद्धानंद जी को नमन करते हुए अमेरिका में आयोजित होने वाले आर्य महासम्मेलन पर सभी आर्यजनों को आमंत्रित किया तथा विशाल शोभायात्रा में तथा सार्वजनिक सभा में उपस्थित आर्य जनों को इस सफल आयोजन की बधाई दी। आपने दिल्ली सभा के सेवा कार्यों के सफल संचालन के लिए सभी अधिकारियों, कार्यकर्ताओं को भी बधाई दी।

सिक्किम के महामहिम राज्यपाल बाबू श्री गंगा प्रसाद जी ने स्वामी श्रद्धानंद जी को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए अपने विशेष उद्बोधन में कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती जी के अनन्य शिष्य, महान राष्ट्र भक्त स्वामी श्रद्धानंद जी का बलिदान मानवमात्र के लिए वंदनीय है। उनका अदम्य साहस और निर्भीकता अद्वितीय और अनुपम थी। वे कल्याण मार्ग के पथिक थे, महात्मा गांधी ने उन्हें अपना बड़ा भाई मानते थे, उन्होंने गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की और वैदिक धर्म और संस्कृति को पुनः स्थापित किया। दलितों के कल्याण के लिए दलितोद्धार सभा बनाई और शुद्धि आन्दोलन चलाकर बिछुडों को गले लगाया। स्वामी श्रद्धानंद जी को शत शत नमन करते हुए आपने उपस्थित लोगों को मानव सेवा और राष्ट्र निर्माण के रास्ते पर चलने की प्रेरणा दी और श्रद्धानंद बलिदान दिवस के आयोजन कर्ताओं को बधाई दी।

आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली राज्य के प्रधान श्री सुरेंद्र कुमार रैली जी ने स्वामी श्रद्धानंद जी के उपकारों को स्मरण करते हुए दिल्ली की समस्त आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं की ओर से स्वामी श्रद्धानंद जी को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की और कहा की आर्य समाज स्वामी जी के अधूरे कार्यों को पूरा करने के लिए सतत प्रयासरत है और रहेगा। स्वामी जी ने जहां दलितोद्धार के लिए कार्य किया, वहीं शुद्धि आंदोलन चलाया, देश की आजादी के लिए प्रेरणा दी और एकता अखंडता का पाठ पढ़ाया। स्वामी जी के अनगिनत उपकार मानव समाज के ऊपर हैं। आज उनके बलिदान दिवस पर सर्व समाज को गले लगाओ, भारत को मजबूत बनाओ का हम आह्वान करते हैं और इस अवसर पर सभी उपस्थित आर्य समाजों के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्य इस अभियान को आगे बढ़ाने का संकल्प लें। स्वामी श्रद्धानंद जी को नमन करते हुए उन्होंने कहा कि इस अवसर पर सभी अधिकारियों, कार्यकर्ताओं का आभार,आप सभी के सहयोग से यह आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। सभी का बहुत बहुत धन्यवाद।

श्री विनय आर्य जी ने आर्य समाज के सेवा कार्यो का संक्षिप्त वर्णन करते हुए कहा कि आज पूरे देश और दुनिया में आर्य समाज राष्ट्र निर्माण और मानव सेवा के अनेक प्रकल्पों को आगे बढ़ा रहा है। श्री जितेंद्र नारायण त्यागी जी का स्वागत करते हुए कहा कि कि आप उन सभी लोगों के लिए एक प्रेरणा का प्रमुख अध्याय हैं जो असमंजस की स्थिति में अपने जीवन को बिता रहे हैं, आपने अदम्य साहस और निर्भीकता से घर वापसी की है, स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रति आपकी श्रद्धा भावना स्तुत्य है। संपूर्ण आर्य समाज हर स्थिति में सदा आपके साथ है और रहेगा। विनय आर्य जी ने बताया कि श्री जितेंद्र नारायण त्यागी जी अपने नाम के सामने अब आर्य लिखा करेंगे। आपने जे.बी.एम. ग्रुप के चेयरमैन और अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के प्रधान श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी के जीवन वृत्त का उल्लेख करते हुए कहा कि आप उस आदर्श आर्य समाज परिवार से हैं जिनके पिताजी, माताजी, दादाजी, नानाजी आदि सब पूर्वज आर्य समाज के महान आदर्श स्तंभ थे। महर्षि दयानंद सरस्वती की 200 वीं जन्म जयंती पर सार्वदेशिक सभा की ओर से आपको आयोजन समिति का राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में मनोनीत किया गया है। आर्य समाज के सेवा कार्यों में अपार सहयोग प्रदान करके सफलतापूर्वक आगे बढ़ा रहे हैं।

श्री कपिल खन्ना जी, अध्यक्ष विश्व हिंदू परिषद ने अपने विशेष उद्बोधन में कहा कि स्वामी श्रद्धानंद जी भारत राष्ट्र के उन महापुरुषों में प्रमुख हैं, जिन्होंने ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ आवाज बुलंद की थी। उन्होंने अदम्य साहस और निर्भीकता की मिसाल कायम करते हुए अंग्रेजी सिपाहियों की संगीनों को नीचे झुका दिया था। उन्होंने धर्मांतरण पर रोक लगाई, शुद्धि आंदोलन चलाया और सामाजिक समरसता के वे अग्रदूत रहे। राष्ट्र निर्माण और धर्म रक्षा के लिए उन्होंने अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया। ऐसे महापुरुष का बलिदान दिवस धर्म रक्षा दिवस के रूप में सारे देश में मनाया जाए, तो अत्यंत श्रेष्ठ होगा।

आर्य समाज के कार्यकर्ता, अधिकारियों एवं विशिष्ट महानुभावों का सम्मान

आर्य जगत के मूर्धन्य संन्यासी स्वामी प्रणवानन्द जी एवं सिक्किम के महामहिम राज्यपाल श्री गंगा प्रसाद जी को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित करते हुए श्री सुरेन्द्र रैली जी और श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी तथा जे.बी.एम. ग्रुप के चेयरमैन एवं अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के प्रधान श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी को सम्मानित करते हुए श्री सुरेन्द्र कुमार रैली जी, श्री गंगा प्रसाद जी, श्री जितेन्द्र नारायण त्यागी जी और जोगेन्द्र खट्टर जी

दिल्ली बी.जे.पी. के पूर्व अध्यक्ष श्री आदेश गुप्ता जी, श्री जितेन्द्र नारायण त्यागी जी तथा श्री कपिल खन्ना जी को सम्मानित करते हुए श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी, श्री गंगा प्रसाद जी, आर्य सतीश चडडा, संन्यासी वृंद एवं श्री सुरेन्द्र रैली जी

श्रीमती एवं श्री हीरालाल चावला जी, श्रीमती वीना आर्या जी, श्री सुखबीर सिंह आर्य जी, श्री राधाकृष्ण आर्य जी, श्री उमेद सिंह शर्मा जी को सम्मानित करते हुए श्री सुरेन्द्र रैली जी, सुरेन्द्र कुमार आर्य जी, श्रीमती ऊषा किरण कथूरिया जी, श्री कीर्ति शर्मा जी

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट द्वारा अंग्रेजी, बंगाली और उर्दू में प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश का विमोचन करते हुए सर्वश्री विनय आर्य जी, मनीष भाटिया जी, श्रीमती ऊषा किरण कथूरिया जी, अरुण प्रकाश वर्मा जी, जोगेन्द्र खट्टर जी, सुरेन्द्र रैली जी, जितेन्द्र नारायण त्यागी जी, कीर्ति शर्मा जी, सुरेन्द्र कुमार आर्य जी, कपिल खन्ना जी, विश्रुत आर्य जी द्वितीय चित्र में दिल्ली सभा द्वारा संचालित महिला स्वरोजगार योजना के अंतर्गत सामूहिक रूप से चेक प्राप्त करती हुई महिलाएं।

कड़ाके की सर्दी के बीच आर्य वीरदल, वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश की विभिन्न शाखाओं तथा आर्य विद्यालयों के बच्चे विशाल शोभायात्रा में योगासन, स्तूप, लाठी, तलवार, नांचाक, मलखम पर योगासन आदि अदभुत व्यायाम प्रदर्शन करते हुए।

What the Vedas Stand for

After all the preliminaries about the Vedas and things necessary to bring readers up to the mark about the necessary informations about them in a critical way, it's quite in the fitness of things to supply briefly as to what the Vedas stand for :—

(1) Divinity Formless and Personal and His Worship.

The most important subject touched in the Vedas is the proper conception of Godhead, vis-a-vis, His relationship with soul and matter in the context of the creation, sustenance and dissolvtion of the universe in all its bearings.

God, according to the Vedas, is no extraction or summation of conceptions or phenomea, but a distinct personal being, master of the entire universe and its creatures and the supreme and the prime mover of the whole show, passing and repassing before our inner and outer vision. He is the master spirit, being at one and the same time here, there and everywhere, running the universe and all that it includes and stands for without any assistance, recommendation, intermediation, interpretation or execution of anybody at any level.

Briefly speaking, God is self-excistent, unlimitedly intelligent or conscious and eternally blissful. He is formless, omnipotent, ornnicompetent, omnipresent, omniscient, omnific, omniperfect, omni-independent, immnnent, kind, just, unborn, endless, unchangeable, beginningless, unequal, Imaging, immortal, eternal, supreme master, fearless, holy, steady and creator, sustainer and disintegrator of the universe. He, alone, should be eulogised, prayed to and meditated upon.

Any kind of anthropomorphism, animalisation, henotheism or polytheism is antivedic. Vedicism advocates unqualifid monotheism. It also rejects pantheism or monism in all forms. It propounds triad of God, soul and matter (causal) as three coeternal entities, matter existing all the time, soul existing all the time and knowing things to a limited extent, and God

existing all the time by Himself, knowing all things unlimitedly and being eternally blissful.

As God is just a spirit, being strictly nonmaterial, it's foolish to think of His idol, icon, hierograph or any other kind of material representation or symbolisation. Idolatry, iconolatry, hierolatry, ete., are foreign to the Vedas.

According to the Vedas, God is rightly one and only one, no second, no third, no fourth, no fifth, no sixth, no seventh, no eighth, no ninth and no tenth (A.harvaved, 13. 4. 12-21). The whole of the Atharvaved (13.4. 1-56) and various texts from the other three Vedas, too numerous to mention, state of His attributes, as mentioned just above, which make it absolufely clear that God does not incarnate or assume any physical form to do this or that work, which is inconsistent wiih His attributes, nature, laws and dispensation of things. There is also no necessity of anything of the sort. Similarly, it's height of nonsense to think that He needs begetting or begets any physical son or daughter or requires any messenger, prophet, go-between, executive officer, and the like, through whom, alone, He can be approached. As a matter of fact, the Vedas would not sanction any such intermediary, and in its place state categorically that there is nothing in between man and God, Who knows what a man thinks, hears what he speaks and sees what he does, and awards 1-is deed every moment of his existence all by Himself. The Divine glorification, prayer and meditation should, according to them, be essentially and inevitably direct.

To be continued in next issue

अखिल भारतवर्षीय श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा द्वारा 96 वां बलिदान दिवस सम्पन्न

परिवार बचाओ, गले लगाओ का संकल्प लें आर्यजन -विनय आर्य

आर्य समाज आर्य नगर, पहाड़ गंज एवं अखिल भारतवर्षीय श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा द्वारा 23 दिसम्बर 2022 को स्वामी श्रद्धानन्द का 96 वां बलिदान दिवस सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर यज्ञ, भजन और प्रवचनों के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किये गए। ठाकुर विक्रम सिंह जी, श्री विनय आर्य जी, श्री सुरेन्द्र रैली जी, श्री यशपाल सांतनु जी और आचार्य भद्रकाम वर्णी जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर आधारित प्रेरक संदेश दिया। विनय आर्य जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा दलित और बिछड़ों को गले लगाने की योजना को आगे बढ़ाने का संकल्प लेने की प्रेरणा देते हुए कहा कि हमें उनके बताये रास्ते पर पूरी निष्ठा के साथ चलना है। श्री संजीव कोहली जी, श्री विजय कपूर जी आदि अधिकारियों ने सभी महानुभाव का सम्मान और धन्यवाद किया।

-संजीव कोहली, मंत्री

आर्य समाज आदर्श नगर का 65 वां वार्षिकोत्सव 28 दिसम्बर से 1 जनवरी तक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर गायत्री यज्ञ, भजन और प्रवचन श्रवण कर आर्यजन लाभान्वित हुए। ***-मंत्री, सुदीप्ता कुशवाहा***

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू कश्मीर द्वारा आर्य वीरांगना दल की ओर से 25 दिसम्बर से 1 जनवरी तक 2023 तक वैदिक वानप्रस्थ आश्रम गढ़ी उधमपुर में संस्कार निर्माण एवं आत्म सुरक्षा शिविर सम्पन्न हुआ।

आर्योद्देश्यरत्नमाला पद्यानुवाद
आप्त-परीक्षा-आठ प्रमाण

81-आप्त

जो छलादि दोषों रहित,
धर्मात्मा, विद्वान ।
सत्योपदेशक, वाग्मी, होवे
कृपानिधान ।।100।।
अज्ञ-हृदय में जो करे
विद्या-सूर्य-प्रकाश ।
वही 'आप्त' संसार में
परम पिता का दास ।।101।।

82-परीक्षा

प्रत्यक्षादि प्रमाण, श्रुति,
आत्मशुद्धि हो मूल ।
वही 'परीक्षा' सत्य जो
सृष्टि-क्रम-अनुकूल ।।102।।

83-आठ प्रमाण

प्रथम रहे प्रत्यक्ष तो
फिर होता अनुमान ।
उपमानों के बाद है,
शब्दैतिह्य-विधान ।।103।।
अर्थापत्ति विचार फिर
सम्भव और अभाव ।
सत्य परीक्षा में यही रखते
'आठ' प्रभाव ।।104।।

साभार :
सुकवि पण्डित ओंकार मिश्र जी द्वारा पद्यानुवादित पुस्तक से

प्रेरक प्रसंग

आर्यसमाज ने क्या सिखाया है?

हुतात्मा भाई श्री श्यामलालजी के गतिमान व्यक्तित्व से, उनके तप, त्याग व सेवा से हैदराबाद राज्य की जनता बहुत प्रभावित थी। भाईजी के बढ़ते हुए प्रभाव से निजामशाही कम्पित हो रही थी और पौराणिक (उत्तर भारत के) ईर्ष्या से जल-भुन रहे थे। इस प्रभाव को नष्ट करने के लिए ही आर्यसमाज व महर्षि दयानन्दजी को गालियाँ देने में प्रवीण कई उत्तर भारतीय पौराणिक विद्वान् हैदराबाद के चक्कर काटते रहे। शास्त्रार्थ के लिए भी आर्यसमाज को कहते रहे। निजाम के राज्य में बड़े-बड़े मौलवी थे, परन्तु यह इतिहास का एक कठोर सत्य है कि उत्तर की भाँति दक्षिण में भी माधवाचार्यजी तथा उनके तिलकधारी पण्डितों में से किसी ने भी कभी भी किसी मुसलमान से शास्त्रार्थ नहीं किया। यह भी सम्भव है कि पौराणिकों को शास्त्रार्थ के नाम पर आर्यसमाज से भिड़ाने में पर्दे के पीछे निजाम सरकार का भी हाथ हो। यह आश्चर्य की बात है, परन्तु है सत्य कि हैदराबाद के प्रधानमंत्री राजा सर किशन प्रसाद को इस्लाम में जाने से कोई कालूराम व माधवाचार्य नहीं रोक सका। उस प्रभावशाली व्यक्तित्व को तो पण्डित श्री रामचन्द्रजी देहलवी ने ही इस्लाम ग्रहण करने से बचाया। स्मरण रहे कि राजा सर किशन प्रसाद के पुत्र का नाम खाजा प्रसाद था। इससे पाठक अनुमान लगा सकते हैं कि उनपर इस्लाम का कितना गहरा प्रभाव था।

आर्यसमाज के व्यापक प्रभाव को नष्ट करने के लिए उदगीर में शास्त्रार्थ का आयोजन किया गया। कोई विख्यात आर्यशास्त्रार्थी तब दक्षिण में प्रचारार्थ न पहुँच सका। भाई श्यामलालजी ने अपनी नगरी में यह चुनौती स्वीकार की। पौराणिक पण्डित ने भाईजी को देखते ही कहा- ''मेरे सामने किसी विद्वान् को लाओ। इसको क्या ले आये? इसे तो यह भी पता नहीं कि वेद की.....कहाँ है''? (जो शब्द मैंने यहाँ छोड़े हैं वे इतने अश्लील हैं कि यहाँ लिखे नहीं जा सकते।)

भाईजी ने बड़े शान्त भाव से उत्तर देते हुए कहा कि हमने आर्यसमाज में यही सीखा है कि वेद परमात्मा की पावमानी कल्याणी वाणी है। वेद हमारी माता (स्तुता मया वरदा वेदमाता है। हम आर्य लोग माता के मुख का दर्शन तो करते हैं और करवा सकते हैं। हमने माता की..... नहीं देखी? यह तो पौराणिक पण्डित ही कर सकते हैं।

जिस शिष्टता व प्रत्युत्पन्नमति से श्याम भाई ने उत्तर दिया उससे श्रोतागण झूम उठे। उनकी साधना का पहले ही अमिट प्रभाव था। इस विजय ने आर्यसमाज के प्रभाव को और भी चार चाँद लगा दिए।

केवल इतिहास को सुरक्षित रखने की दृष्टि से यह घटना दी है। आने वाली पीढ़ियां स्मरण रखें कि महर्षि दयानन्द के शिष्यों को किन-किन विचित्र लोगों से पाला पड़ा।

-प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

पृष्ठ 1 का शेष

स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस पर विशाल शोभायात्रा और सार्वजनिक सभा संपन्न

समर्पित भाव से कार्य करता रहा है। स्वामी श्रद्धानंद जी के बलिदान दिवस पर आर्यवीर, वीरांगनाओं द्वारा शोभा यात्रा के दौरान लाठी, तलवार, नांचाक, मुगधड, योगासन, प्राणायाम आदि के विशेष प्रदर्शन किए गए। एक तरफ आर्य महापुरुषों के जय जयकार और दूसरी तरफ व्यायाम प्रदर्शन से समूचा क्षेत्र रोमांचित हो उठा। बीच-बीच में आर्य जनों द्वारा आर्य वीरों का उत्साह बढ़ाने के लिए तालियों की गड़गड़ाहट और स्वामी श्रद्धानंद का जय जयकार होता रहा। शोभा यात्रा की शोभा बढ़ाने के लिए आर्य गुरुकुल तिहाड़ गांव ने गुरुकुल का दृश्य, अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा अपने संचालित सभी विद्यालयों व छात्रावासों के भवनों का दृश्य, वैदिक सत्संग ग्रुप राजौरी गार्डन ने वैदिक प्रचार प्रसार हेतु किए जा रहे प्रयासों का दृश्य, आर्य समाज सूरजमल विहार ने यज्ञ करते हुए, महर्षि दयानंद पब्लिक स्कूल, आर्य समाज शादीपुर खामपुर ने स्वामी श्रद्धानंद जी द्वारा जामा मस्जिद की प्राचीर से तथा स्वर्ण मंदिर, अमृतसर के तख्त से उद्बोधन के दृश्य, अमृत पाल आर्य शिशु शाला आर्य समाज ग्रेटर कैलाश 1 द्वारा स्वामी श्रद्धानंद जी को समर्पित, आर्य समाज प्रीत विहार द्वारा व्यामशाला के दृश्य से सुसज्जित और प्रांतीय आर्य महिला सभा द्वारा सत्संग की झांकियों ने बहुत ही सुंदर शोभा बढ़ाई। आर्य समाजों की ओर से शोभायात्रा का बीच बीच में स्वागत किया गया। यह शोभायात्रा अपने पूरे दल बल के साथ लंबी यात्रा पूरी करके लगभग 2 बज तक रामलीला मैदान में संपन्न हुई।

रामलीला मैदान में सार्वजनिक सभा का शुभारंभ आर्य समाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री दिनेश पथिक जी के प्रेरक भजनों से हुआ। आपने देशभक्ति, ईश्वर भक्ति और महर्षि दयानंद, स्वामी श्रद्धानंद तथा आर्य समाज के सेवा कार्यों पर आधारित भजन प्रस्तुत किए। इसके उपरांत मंचस्थ आर्य नेताओं सहित उपस्थित जनसमूह ने दो मिनट का मौन रखकर अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानंद जी को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर मंच पर स्वामी प्रणवानंद जी, श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी, श्री सुरेंद्र रैली जी, श्री कपिल खन्ना जी, श्री जितेंद्र नारायण त्यागी जी, श्री विश्रुत आर्य जी, श्री राधा कृष्ण आर्य जी, श्री उमेद सिंह शर्मा जी, श्रीमती एवं श्री हीरालाल चावला जी, श्री सुभाष दुआ जी, श्री सुखबीर सिंह आर्य जी, श्रीमती कथूरिया जी, आर्य सतीश चड्ढा, श्री मनीष भाटिया जी, श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी, श्री विनय आर्य जी, श्री जोगेंद्र खट्टर जी, श्री कीर्ति शर्मा जी इत्यादि महानुभाव उपस्थित थे।

इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा महिला सशक्तिकरण के लिए संचालित महिला स्वरोजगार योजना माध्यम से निर्धन महिलाओं को चौक प्रदान किए गए। स्वामी श्रद्धानंद जी के जीवन पर आधारित नाटिका का मंचन राजू आर्य के नेतृत्व में यज्ञ उत्थान समिति के सदस्यों, आर्य वीर, वीरांगनाओं द्वारा प्रस्तुत किया गया। जिसे देखकर सभी आर्य जन भावविभोर हो गये। कार्यक्रम को सफल बनाने में सभी आर्य समाजों के अधिकारियों ने बढ़-चढ़कर इस शोभायात्रा में भाग लिया, सभी का धन्यवाद। फिर भी व्यवस्थाओं की दृष्टि से उपप्रधान श्री अरुण प्रकाश वर्मा, श्री जोगिंदर खट्टर व संजीव खेत्रपाल, मंत्री ने शोभायात्रा के पूरे मार्ग के संचालन में, श्री अजय सहगल, उपप्रधान तथा श्री विनय आर्य, महामंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, ने बलिदान भवन पर, श्री कीर्ति शर्मा, उपप्रधान ने प्रिंट मीडिया में श्री हरिओम बंसल, उपप्रधान, तथा श्री विरेन्द्र आर्य, मंत्री, एवं उनके परिवार के सहयोग से भोजन व्यवस्था में, श्रीमती ऊषा किरण, उपप्रधाना, मंत्री श्री सुरिन्द्र चौधरी एवं श्रीमती सरोज यादव ने मंच व्यवस्था को संचालित करने में, डॉ. मुकेश आर्य, मंत्री ने शोभायात्रा में सम्मिलित सभी संस्थाओं, उनके वाहनों एवं प्रसाद वितरण करने वालो का डाटा एकत्र करने में तथा श्री संजीव कोहली, मंत्री एवं श्री दिनेश शास्त्री, नयाबांस ने रामलीला मैदान में पंडाल व स्टाल व्यवस्था में, श्री बृहस्पति आर्य ने आर्य वीर दल के अधिकारियों तथा संवर्धकों द्वारा शोभायात्रा में सम्मिलित आर्यवीरदल को सुसज्जित एवं संचालन में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया, सभी का धन्यवाद व साधुवाद!

आचार्य श्री जयप्रकाश शास्त्री एवं श्री अनिल शास्त्री, श्री अश्वनी आर्य एवं श्री अमित शर्मा के नेतृत्व में आर्य संदेश मिडिया केन्द्र के सहयोगियों तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय के सहयोगियों का बहुत बहुत धन्यवाद।

-महामंत्री, आर्य सतीश चड्डा

पृष्ठ 2 का शेष

क्या सच में देश में नफरत का बोलबाला है?

रूप से इतने लोगों को मारने की कोई अन्य घटना घटी हो? तब कौन सी मिडिया ने नफरत फैलाई थी, तब कौन सा देश जुड़ रहा था? तब ये लोग प्रेम फ़ैलाने के बजाय भाषण दे रहे थे कि जब कोई बड़ा पेड़ गिरता है तो धरती डोलती है।

इससे पहले साल 1983 में असम में भले ही राष्ट्रपति शासन लगा था राज्य की कमान केंद्र के हाथ में थी नेली में दंगा हुआ 3000 से भी अधिक लोग मारे गये थे। स्थानीय असम निवासियों और बंगलादेशी मुस्लिमों के इस खूनी संघर्ष को रोकने में तत्कालीन सुरक्षा व्यवस्था नाकाम साबित हुई थी। तब इस नफ़रत का जिम्मेदार कौन था, कौन था? वो देश को तोड़ रहा था? 1987 का बिहार का भागलपुर दंगा हो, 2011 का भरतपुर दंगा हो, 1993 का महाराष्ट्र 1969 का गुजरात दंगा, साल 1989 का मुरादाबाद दंगा हो। यानि एक लम्बी सूची दंगो की बन सकती है। इन्हीं की सरकारें थी, जब ये दंगे हो रहे थे तब ये नफरत कौन फैला रहा था?

आज जो कम्युनिस्ट पार्टी प्रेम के गीत पढ़ा रही है क्या वो खुद भूल गयी बंगाल का नंदीग्राम कांड जिसमें उनके हाथ मासूम बच्चों के खून में सने है? मुगलों से लेकर अंग्रेजों तक नेहरु से लेकर अब तक आखिर भारत में कौन सा स्वर्णयुग रहा, कौन सा प्रेम का काल रहा कब गंगा जमुनी तहजीब रही? हाँ, सहनशीलता या महानगरीय सहअस्तित्व के कुछ दौर ज़रूर रहे हैं। लेकिन ये वास्तव में दिलचस्प अपवाद थे, कोई प्रेम का दौर नहीं था। लेकिन आज जिस तरफ नफरत फैलने नफरत बाँटने के भाषण दिए जा रहे हैं उसे देखकर लगता है, जैसे इनके शासनकाल में इनके अन्दर सम्राट विक्रमादित्य स्वयं मौजूद हो और कहीं कोई हिंसा ना हुई हो, कोई अपराध न हुआ हो। जो नेता आज रेप के मामले में केंडल मार्च निकालते हैं क्या वो भूल गये निर्भया केस में प्रदर्शन करने वाली छात्रओं पर किस तरह लाठी चार्ज किया गया था?

हाँ आज कुछ बदलाव हुए आज श्रद्धा वालकर हो या अंकिता जब ऐसे केस होते हैं तो सवाल जरुर उठने लगे हैं। हत्या और हत्यारे की मानसिकता पर बहस होने लगी है। लोग इतिहास के कुछ विषयों पर सवाल उठाने लगे हैं। हो सकता इन सवालों को अब नफरत होने बाँटने का रूप दिया जा रहा है। इस कारण विपक्ष के सवाल सत्ता से हो सकते है। जो किसी भी लोकतंत्र में होते हैं। सहमती-असहमति होती है, लेकिन ये नफरत का पूरा ठीकरा सरकार और मिडिया पर फोड़ना कहाँ तक सही है? क्योंकि हमारा अतीत मजहबी आतंक से हजारों से पीड़ित है, जिसे आज नफरत दिखाई दे रही है, वो मुगलकाल से लेकर यहाँ तक इतिहास एक बार जरुर पढ़े।

-संपादक

वैदिक सूक्तियां

1- विद्यालय

विद्याऽमृतमश्नुते -यजु० 40-41

(विद्या से अमृत की प्राप्ति होती है।)

2- गुरुकुल

आचार्यो अन्तेवासी उदरे विभर्ति

-अथर्व-ब्रह्मचर्य सूक्त

(ब्रह्मचारी को आचार्य अपने आश्रम मे रखता है।)

3- छात्र-छात्रा

ब्रह्मचर्येण तपसः देवा मृत्युमपाघ्नत -अथर्व -ब्रह्मचर्य सूक्त

(ब्रह्मचर्य के द्वारा देवता मृत्यु को जीत लेते हैं।)

4- औषधालय

सर्वेसन्तु निरामयाः -नीति वचन

(सभी निरोगी हो।)

आचार्य आशीष आर्य जी दर्शनाचार्य के मार्गदर्शन में वैदिक योग ध्यान प्रशिक्षण शिविर (प्रथम स्तर)

ध्यान के द्वितीय स्तर में प्रवेश के इच्छुक महानुभावों के लिए यह स्वर्णिम अवसर है।

दिनांकः- 5 से 12 फरवरी, 19 से 26 फरवरी, 2023

स्थानः- आत्मोन्नति (वैदिक योग ध्यान एवं सिद्धांत प्रशिक्षण केन्द्र) तपोभूमि, ग्राम भडताना, जिला - जीन्द, हरियाणा

शिविर में भाग लेने व विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्रः-

1. **श्री महेन्द्र सिंह पडियार जी 07830815937**
2. **श्री नंदकिशोर अरोडा जी 09310444170**
3. **श्री आचार्य आत्मप्रकाश आर्य जी 09416773617**

यज्ञ संबन्धित जानकारी प्राप्त करने के लिए

7428894020 मिस कॉल करें

thearyasamaj.org

मैं आर्य समाजी कैसे बना?

इस स्तम्भ में उन महानुभावों का परिचय प्रकाशित किया जा रहा है जो किसी की प्रेरणा/ विचारधारा से आर्य समाजी बनें हों। यदि आपके साथ भी कुछ ऐसा हुआ है तो आप भी अपना प्रेरक प्रसंग अपने फोटो के साथ लिखें अपने आर्यसमाजी बनने की कहानी और भेज दें aryasabha@yahoo.com पर ईमेलं। आप हमें अपनी कहानी और फोटो डाक द्वारा भी भेज सकते हैं। हमारा पता है- **सम्पादक, आर्य सन्देश साप्ताहिक, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001**

शोक समाचार

वैद्य श्री इन्द्र देव जी का निधन

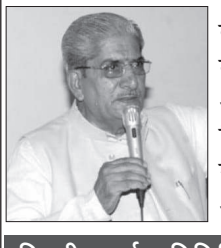

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व महामंत्री एवं दीर्घकाल तक आर्य समाज के सम्मेलनों की व्यवस्था को प्रमुखता से संभालने वाले वैद्य श्री इन्द्र देव जी का आकस्मिक निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार 28 दिसम्बर को निगम बोध घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। जिसमें दिल्ली सभा के अधिकारियों सहित अनेक आर्यजन सम्मिलित हुए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त व परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -संपादक

सोमवार 26 दिसम्बर, 2022 से रविवार 01 जनवरी, 2023
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि. नं0 डी. एल. (एन. डी.)- 11/6071/2021-22-2023
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 28-29-30 दिसम्बर, 2022 (बुध-वीर-शुक्रवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-2023
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 28 दिसम्बर, 2022

गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रिवार्षिक चुनाव संपन्न

सर्वसम्मति से श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी को प्रधान तथा श्री दीपक भाई ठक्कर जी को महामंत्री निर्वाचित किया गया

11 दिसम्बर 2022 को जामनगर आर्य समाज में गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के त्रिवार्षिक चुनाव में सर्वसम्मति से श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी को प्रधान तथा श्री दीपक भाई ठक्कर जी को महामंत्री निर्वाचित किया गया। नवनिर्वाचित प्रधान तथा महामंत्री को सर्वसम्मति से अंतरंग का गठन करने का अधिकार भी दिया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य संदेश परिवार की ओर से नवनिर्वाचित अधिकारियों को हार्दिक बधाई।

श्री सुरेश चन्द्र आर्य
प्रधान

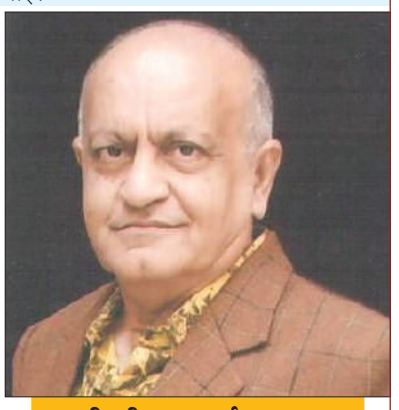

श्री दीपक भाई ठक्कर
महामंत्री

प्रतिष्ठा में,

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा दयानंद मठ रोहतक का त्रिवार्षिक निर्वाचन संपन्न

श्री राधाकृष्ण आर्य -प्रधान, श्री उमेद सिंह शर्मा -महामंत्री, श्रीमती सुमित्रा आर्या -कोषाध्यक्ष निर्वाचित

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा दयानन्द मठ रोहतक का त्रिवार्षिक निर्वाचन दिनांक 30 नवम्बर 2022 को सम्पन्न हुआ। जिसमें सर्वसम्मति से श्री राधाकृष्ण आर्य जी को प्रधान, श्री उमेद सिंह शर्मा जी को महामंत्री एवं श्रीमती सुमित्रा आर्या जी को कोषाध्यक्ष निर्वाचित किया गया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य संदेश परिवार की ओर से नवनिर्वाचित अधिकारियों को हार्दिक बधाई।

श्री राधाकृष्ण आर्य
प्रधान

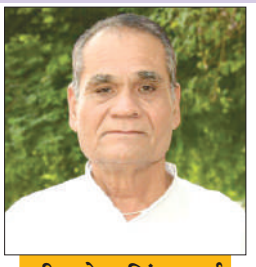

श्री उमेद सिंह शर्मा
महामंत्री

श्रीमती सुमित्रा आर्या
कोषाध्यक्ष

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व संपादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्पेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001, फोनः 23360150, 23365959, E-mail : aryasabha@yahoo.com, Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
● सम्पादकः धर्मपाल आर्य ● सह सम्पादकः विनय आर्य ● व्यवस्थापकः शिवकुमार मदान ● सह व्यवस्थापकः आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह